

व्याज टुडे

अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) परिषद में भारत 2026-27 के लिए सर्वाधिक मतों से पुनर्निर्वाचित हुआ

भारत को श्रेणी B में फिर से चुना गया है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापार में सर्वाधिक रुचि रखने वाले देश शामिल होते हैं।

▶ IMO परिषद में तीन श्रेणियों (A, B और C) में 40 निर्वाचित सदस्य होते हैं और यह IMO के कार्यकारी निकाय के रूप में कार्य करती है।

IMO के बारे में (मुख्यालय: लंदन, यूनाइटेड किंगडम)

▶ उत्पत्ति: वर्ष 1948 में अंतर-सरकारी समुद्री सलाहकार संगठन (IMCO) के रूप में स्थापना की गई थी। वर्ष 1982 में नाम बदलकर IMO कर दिया गया था।

▶ भूमिका: यह संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी है, जो पोत परिवहन की सुरक्षा और संरक्षा के लिए जिम्मेदार है।

⊕ पोत परिवहन उद्योग के लिए एक विनियामक ढांचा तैयार करना, जो निष्पक्ष एवं प्रभावी, सार्वभौमिक रूप से अपनाया गया और सार्वभौमिक रूप से कार्यान्वित हो।

IMO की समुद्री सुरक्षा में भूमिका

▶ प्रमुख IMO अभिसमय और रणनीतियां:

⊕ जहाजों से प्रदूषण की रोकथाम के लिए अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय (MARPOL): जहाजों से तेल, रसायन, सीवेज, अपशिष्ट आदि से होने वाले प्रदूषण को रोकना और न्यूनतम करना।

⊕ ब्लॉस्ट जल प्रबंधन अभिसमय: हानिकारक जलीय जीवों और रोगजनकों के प्रसार को रोकना तथा नए समुद्री परिवेश में आक्रामक प्रजातियों के प्रवेश को रोकना।

⊕ समुद्री जीवन के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय (SOLAS): जहाजों के लिए न्यूनतम सुरक्षा मानक स्थापित करता है। इन मानकों में अग्निशमन और नेविगेशन के लिए आवश्यकताएं शामिल हैं।

⊕ नाविकों के प्रशिक्षण, प्रमाणन और वॉचकीपिंग के मानकों पर अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय: यह नाविकों के प्रशिक्षण एवं प्रमाणन के लिए योग्यता निर्धारित करता है।

⊕ जहाजों से ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में कमी पर 2023 IMO रणनीति: इसका उद्देश्य 2050 तक नेट जीरो GHG उत्सर्जन प्राप्त करना है।



भारत में आपदा से निपटने में वित्तीय समस्याएं

भारत में आपदा राहत के वित्त-पोषण में अंतराल बढ़ता जा रहा है। आपदा राहत के लिए आकलन की गई आवश्यकताओं और जारी की गई वास्तविक राशि के बीच का अंतराल लगातार बढ़ रहा है। इसका एक उदाहरण केरल के वायनाड में भूस्खलन के बाद जारी की गई राशि है।

▶ यह स्थिति इस बात पर सवाल उठाती है कि क्या भारत का वित्तीय संघवाद (Fiscal federalism) ढांचा, सहकारी संघवाद से अधिक केंद्रीयकृत और शर्त-आधारित आपदा वित्त-पोषण प्रणाली की ओर बढ़ रहा है।

भारत में आपदा से निपटने का वित्त-पोषण ढांचा

▶ यह ढांचा आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 के तहत स्थापित किया गया है। यह ढांचा निम्नलिखित दो-स्तरीय संरचना पर आधारित है:

⊕ राज्य आपदा मोचन निधि (State Disaster Response Fund: SDRF): इस निधि में केंद्र सरकार और संबंधित राज्य सरकार, दोनों वित्तीय अंशदान देती हैं।

◆ केंद्र और राज्य सरकारें ये अंशदान आम तौर पर हिमालयी और पूर्वोत्तर राज्यों के मामले में 90:10 के अनुपात में जबकि शेष राज्यों के मामले में 75:25 के अनुपात में देती हैं।

▶ राष्ट्रीय आपदा मोचन निधि (National Disaster Response Fund: NDRF): यह निधि पूर्णतः केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित है। इसका उद्देश्य SDRF को तब पूरक सहायता देना है जब किसी आपदा को आधिकारिक रूप से "गंभीर" प्रकृति के रूप में वर्गीकृत किया जाए।

वित्त-पोषण ढांचे की प्रमुख संस्थागत समस्याएं

▶ राहत राशि वितरण का पुराना मानक: आपदा में किसी व्यक्ति की मौत होने पर अधिकतम 4 लाख रुपये की प्रतिपूर्ति राशि दी जाती है। यह राशि पिछले एक दशक से लगभग अपरिवर्तित है।

▶ आपदा के वर्गीकरण में अस्पष्टता: आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 यह स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं करता कि "गंभीर" (Severe) आपदा क्या है। इससे NDRF के तहत सहायता राशि जारी करने की पात्रता में केंद्र का विवेकाधिकार बढ़ जाता है।

▶ सहायता राशि जारी करने की जटिल प्रक्रिया एवं देरी से जारी होना: आपदा-सहायता राशि जारी करने के लिए कई स्तरों पर स्वीकृति लेनी पड़ती है। इन प्रक्रियाओं में राज्य द्वारा ज्ञापन देना, केंद्रीय टीम द्वारा आपदा से हुए नुकसान का आकलन, उच्च-स्तर पर मंजूरी लेना, आदि शामिल हैं।

▶ आपदा-राहत आवंटन पर वित्त आयोग के मानदंड में कमियां: वर्तमान मानदंड में राज्य की जनसंख्या और कुल भौगोलिक क्षेत्रफल को आपदा जोखिम आवंटन का प्रमुख संकेतक माना गया है। इस मानदंड में किसी राज्य के अधिक आपदा-प्रवण होने को नजरअंदाज किया गया है।

⊕ आपदा-सुभेद्यता (Disaster vulnerability) के आकलन के लिए आपदा जोखिम सूचकांक को आधार बनाने की बजाय निर्धनता स्तर को आधार बनाया जाता है।

आपदा से बेहतर तरीके से निपटने हेतु वित्तपोषण पर आगे की राह

▶ विश्व की सर्वोत्तम कार्य-प्रणालियों (Best practices) को अपनाया चाहिए:

⊕ संयुक्त राज्य अमेरिका की संघीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (FEMA) आपदा राहत वित्तपोषण के लिए 'प्रति व्यक्ति क्षति' मापदंड का उपयोग करती है।

⊕ मैक्सिको में पूर्ववर्ती FONDEN आपदा राहत प्रणाली वर्षा की मात्रा अथवा पवन गति की निर्धारित ऊपरी सीमा पार होते ही स्वतः वित्तीय राशि जारी कर देती थी।

⊕ फिलीपींस वर्षा एवं मृत लोगों की संख्या से संबंधित सूचकांक की गणना के आधार पर त्वरित सहायता राशि जारी करता है।

⊕ कई अफ्रीकी और कैरेबियाई देशों की बीमा योजनाएं सेटेलाइट से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर शीघ्र भुगतान सुनिश्चित करती हैं।

▶ अन्य सुझाव:

⊕ आपदा राहत आवंटन मानदंडों की फिर से समीक्षा करनी चाहिए और इसके लिए एक व्यापक सुभेद्यता सूचकांक (Vulnerability index) को आधार बनाना चाहिए।

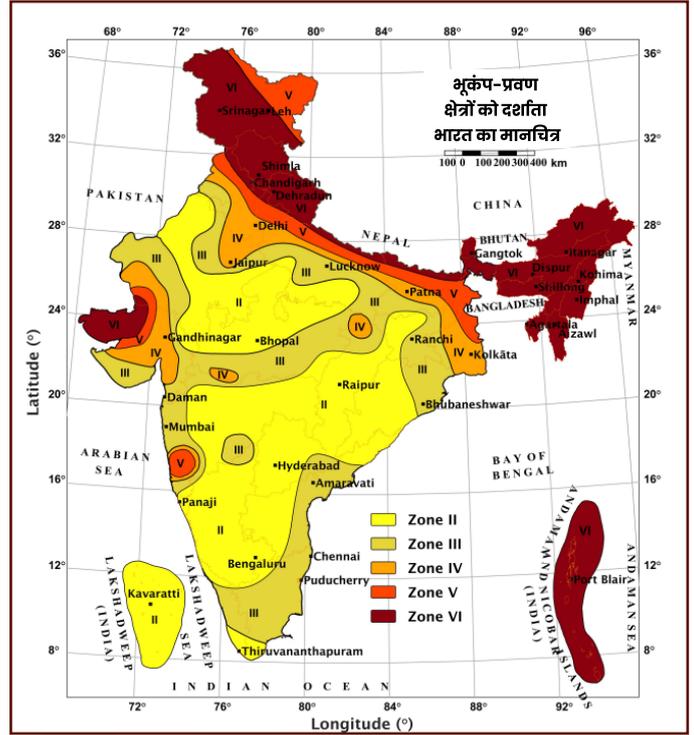
⊕ आपदा राहत से जुड़े मानदंडों में संशोधन करना चाहिए, इत्यादि।

भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) ने भारत का नया भूकंपीय ज़ोनेशन मानचित्र जारी किया

भारत ने अपडेटेड अर्थक्रेक डिज़ाइन कोड (BIS, 2025) के तहत एक संशोधित भूकंपीय ज़ोनेशन मानचित्र जारी किया है। यह मानचित्र भ्रंशों, अधिकतम संभावित घटनाओं, क्षीणन (attenuation), विवर्तनिकी (tectonics), शिलाविज्ञान (lithology) आदि पर आधारित है।

नवीन ज़ोनिंग का विवरण

- ज़ोन्स की संख्या: पहले, भारतीय भूभाग को चार भूकंप ज़ोन्स में सीमांकित किया गया था। ये थे- ज़ोन II, III, IV और V.
 - ⊕ एक नया उच्चतम-जोखिम ज़ोन VI पेश किया गया है। इसके अंतर्गत पहली बार संपूर्ण हिमालयी चाप (Himalayan arc) को शामिल किया गया है, जो पहले ज़ोन IV और V के बीच विभाजित था।
 - ज़ोन्स के बीच सीमावर्ती कस्बे: अब ये स्वतः उच्च-जोखिम श्रेणी में आ जाएंगे।
 - जोखिम मानचित्रण: प्रशासनिक सीमाओं की बजाय भूवैज्ञानिक स्थितियों को प्राथमिकता दी गई है।
- भारत की भूकंप के प्रति सुभेद्यता
- भारत की 61% भूमि अब मध्यम से उच्च-जोखिम वाले ज़ोन्स में आती है। पहले 59% भूमि आती थी।
 - भारत की 75% जनसंख्या अब भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्रों में निवास करती है।
- नए मानचित्र के निहितार्थ:
- ⊕ उच्च-जोखिम वाले क्षेत्रों में रेट्रोफिटिंग (पुरानी संरचनाओं को मजबूत करना) पर जोर देना;
 - ⊕ नरम तलछट (soft sediments) पर या सक्रिय भ्रंशों के पास विस्तार को रोकना;
 - ⊕ हिमालयी राज्यों में समान भवन मानकों को लागू करना आदि।
- सरकारी रणनीतियां:
- ⊕ राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) और राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMAs): NDMA आपदा प्रबंधन नीतियों को निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार है, और SDMAs आपदा प्रबंधन योजनाओं को बनाने एवं कार्यान्वित करने के लिए उत्तरदायी हैं।
 - ⊕ राष्ट्रीय भूकंपीय नेटवर्क: यह भूकंपीय गतिविधियों की निगरानी करता है और भूकंप संबंधी पूर्व-चेतावनी प्रणालियों के विकास पर शोध करता है।



शोधकर्ताओं ने सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) के पतन के कारणों को सुलझाने का दावा किया

हाल ही में, "कम्युनिकेशन्स अर्थ एंड एनवायरनमेंट" पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार हड़प्पा सभ्यता यानी सिंधु घाटी सभ्यता का पतन किसी एक बड़ी विनाशकारी घटना के कारण नहीं हुआ था। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

- सूखे का प्रभाव: सामान्य धारणा यह थी कि सिंधु घाटी सभ्यता का पतन किसी एक विनाशकारी घटना के कारण हुआ। नए अध्ययन के अनुसार यह कई सदियों तक जारी सूखे की कई दीर्घकालिक घटनाओं का परिणाम था।
- ⊕ 2425 से 1400 ईसा पूर्व के बीच लगभग 85 वर्षों तक चलने वाले चार भीषण सूखे पड़े, जिनका प्रभाव लगभग पूरे क्षेत्र पर पड़ा।
- संसाधनों में कमी होना: जल-चक्रों (hydrological) में परिवर्तन के कारण नदियों, झीलों और मृदा में जल की कमी हो गई। इन परिवर्तनों ने हड़प्पावासियों को जीवन की अनुकूल दशाओं की खोज में बार-बार जगह बदलने के लिए मजबूर कर दिया।
- व्यापार में गिरावट दर्ज होना: नदियों में जलस्तर कम होने से नदी मार्ग से होने वाला व्यापार बाधित हुआ और कृषि कार्य भी चुनौतीपूर्ण हो गया। इन वजहों से आबादी को पलायन करना पड़ा।
- अन्य कारक: खाद्य आपूर्ति में कमी, शासकीय संरचना कमजोर होना जैसे कारकों ने भी सिंधु घाटी सभ्यता के पतन की प्रक्रिया को तेज किया।

सिंधु घाटी सभ्यता के पतन से संबंधित अन्य प्रमुख सिद्धांत



सिद्धांत



साक्ष्य

विनाशकारी बाढ़ के कारण पतन (रेडिक्स सिद्धांत)

मोहनजोदड़ो के मकानों में कीचड़युक्त मिट्टी की कई परतों और इनके बार-बार पुनर्निर्माण के साक्ष्य मिले हैं।

भूकंप के कारण पतन

इस सिद्धांत के अनुसार भूकंप ने बाढ़कृत मैदानों के स्तर को ऊपर उठा दिया, जिससे नदी जल का समुद्र की ओर प्रवाह-मार्ग अवरुद्ध हुआ और शहरों में पानी भरने लगा।

नदियों के मार्ग में परिवर्तन

- ⊕ सिंधु नदी मोहनजोदड़ो नगर से लगभग 30 मील दूर खिसक गई।
- ⊕ राजस्थान में घग्घर-हकरा नदी का सूख जाना (डी.पी. अग्रवाल)।

बर्बर आक्रमण

ऋग्वेद में 'हरियूपिया' नामक स्थल (संभवतः हड़प्पा) का उल्लेख मिलता है, जहाँ आर्यों ने युद्ध लड़ा था।

पारिस्थितिक असंतुलन (क्रमिक पतन) का सिद्धांत

- ⊕ इतिहासकार फेयर सर्विस ने कहा कि अर्ध-शुष्क क्षेत्रों का नाजुक पर्यावरणीय संतुलन जनसंख्या बढ़ने और संसाधनों के तेजी से घटने से बिगड़ गया था।
- ⊕ डी.पी. अग्रवाल ने जलवायु परिवर्तन को पतन का कारण बताया।

केंद्रीय भूमिजल बोर्ड (CGWB) ने वार्षिक भूजल गुणवत्ता रिपोर्ट, 2025 जारी की

रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर

- ▶ भारत का 71.7% भूजल भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) के मानकों को पूरा करता है, लेकिन 28.3% नमूनों में एक या एक से अधिक मापदंड निर्धारित सीमा से अधिक पाए गए हैं।
- ▶ नाइट्रेट संदूषण: नाइट्रेट राष्ट्रीय स्तर पर सबसे व्यापक संदूषण है। लगभग 20% नमूनों में नाइट्रेट की WHO और BIS द्वारा निर्धारित सीमा (45 mg/L) से अधिक मात्रा पाई गई है। इसके बाद फ्लोराइड और लवणता का स्थान है।
 - ⊕ इसका मुख्य कारण मानवजनित स्रोत हैं, जैसे उर्वरकों का उपयोग, सीवेज व पशु अपशिष्ट का भूजल में रिसना आदि।
- ▶ यूरेनियम संदूषण: पूर्व-मानसून के दौरान 6.71% और मानसून के बाद 7.91% नमूनों में यूरेनियम का स्तर सुरक्षित सीमा (30 ppb) से अधिक पाया गया।
 - ⊕ पंजाब में सबसे अधिक संदूषण दर्ज किया गया। इसके बाद हरियाणा और दिल्ली का स्थान रहा।
- ▶ लवणता: लवणता (विद्युत चालकता) राजस्थान और दिल्ली जैसे शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में एक गंभीर मुद्दा है। 7.23% नमूनों में सीमा से अधिक लवणता पाई गई।
- ▶ फ्लोराइड: देशव्यापी नमूनों में से 8.05% में निर्धारित सीमा का उल्लंघन हुआ है। हालांकि, यह मुख्य रूप से भू-जनित (geogenic/ यानी प्राकृतिक रूप से) था। राजस्थान में सबसे अधिक संदूषण देखा गया।
- ▶ सीसा: दिल्ली में सबसे अधिक सीसा संदूषण दर्ज किया गया। यह संज्ञानात्मक विकास को बाधित कर सकता है, रक्तचाप बढ़ा सकता है, गुर्दे को प्रभावित कर सकता है आदि। इसके अलावा, इसे संभावित कैंसरकारक के रूप में भी वर्गीकृत किया गया है।
- ▶ सिंचाई के लिए उपयुक्तता: भूजल की गुणवत्ता सिंचाई उद्देश्यों के लिए काफी हद तक उपयुक्त है। अधिकांश नमूने (94.30%) “उत्कृष्ट श्रेणी” में आते हैं।
- ▶ अन्य गौण धातु और भू-जनित संदूषण: आर्सेनिक (विशेष रूप से गंगा व ब्रह्मपुत्र बेसिन में), मैंगनीज (जैसे- असम, कर्नाटक, ओडिशा, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल) आदि।

केंद्रीय भूमिजल बोर्ड (CGWB) के बारे में

- ▶ मुख्यालय: फरीदाबाद (हरियाणा)।
- ▶ उत्पत्ति: इसकी स्थापना 1970 में अन्वेषणात्मक नलकूप संगठन का नाम बदलकर की गई थी।
- ▶ मंत्रालय: जल शक्ति मंत्रालय के अधीन।
- ▶ भूमिका: देश के भूजल संसाधनों का प्रबंधन, अन्वेषण, निगरानी व विनियमन करना।
- ▶ यह पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत स्थापित केंद्रीय भूमिजल प्राधिकरण (CGWA) के रूप में भी कार्य कर रहा है।

अन्य सुर्खियां



नाइजीरिया में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT)

पश्चिम अफ्रीका में पहला भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) परिसर नाइजीरिया में स्थापित किया जा रहा है।

- ▶ पहला बैच 2026 में शुरू होने की उम्मीद है। इसमें इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
- ▶ यह पहल भारत की वैश्विक शिक्षा पहुंच में एक बड़ा कदम है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 का हिस्सा है। यह नीति भारतीय विश्वविद्यालयों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
- ▶ नया परिसर IIT मद्रास-जंजीबार मॉडल का अनुसरण करेगा।
 - ⊕ IIT मद्रास-जंजीबार परिसर 2023 में संपूर्ण अफ्रीका के छात्रों के लिए शुरू हुआ था।
 - ⊕ IIT दिल्ली-अबू धाबी परिसर, 2024 में शुरू हुआ है। यह स्थानीय उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप कोर्सिंग प्रदान करता है।



SoLAR चरण-II

दक्षिण एशिया और पूर्वी अफ्रीका में जलवायु-अनुकूल सौर सिंचाई प्रणालियों का विस्तार करने के लिए SoLAR चरण-II का शुभारंभ किया गया।

- ▶ दक्षिण एशिया में कृषि अनुकूलनशीलता के लिए सौर सिंचाई (SoLAR) चरण-II के बारे में
 - ▶ चरण II का शुभारंभ: नवंबर 2025 में। पहला चरण 2019-2024 के दौरान आयोजित किया गया था।
 - ▶ अंतर्राष्ट्रीय जल प्रबंधन संस्थान (IWMI) और स्विस एंजेंसी फॉर डेवलपमेंट एंड कोऑपरेशन (SDC) द्वारा कार्यान्वित।
 - ▶ यह एक बहु-देशीय कार्यक्रम है। इसमें भारत, बांग्लादेश, केन्या और इथियोपिया शामिल हैं।
 - ▶ उद्देश्य: लघु और सीमांत किसानों की सौर ऊर्जा संचालित कृषि तक समान व सतत पहुंच सुनिश्चित करना।



ELVES

हाल ही में, एक छोटे से इतालवी शहर के ऊपर लाल रंग के प्रकाश का एक चमकीला प्रभामंडल तैरता हुआ देखा गया। यह ELVES नामक एक दुर्लभ वायुमंडलीय घटना के कारण हुआ है।

- ▶ ELVES: विद्युत-चुंबकीय स्पंद स्रोत के कारण प्रकाश का उत्सर्जन और अति निम्न आवृत्ति अव्यवस्थाएं।

ELVES के बारे में

- ▶ ELVES प्रकाश उत्सर्जन के तेजी से फैलने वाले वलय होते हैं, जिनका व्यास लगभग 300 किलोमीटर तक हो सकता है। ये पृथ्वी के निचले आयनमंडल में बनते हैं। ये तड़ित (lightning) के रिटर्न स्ट्रोक से उत्पन्न होने वाले विद्युत चुंबकीय स्पंद (Electromagnetic Pulse: EMP) से सृजित होते हैं।
 - ⊕ जब एक शक्तिशाली बिजली चमकती है और जमीन से टकराती है, तो यह “रिटर्न स्ट्रोक” नामक अत्यधिक तीव्र विद्युत प्रवाह उत्पन्न करती है।
 - ▶ इसकी खोज बोएक (Boeck) ने की थी।
 - ▶ ELVES महासागरों के ऊपर अधिक पाए जाते हैं। ये EMP से उत्पन्न विद्युत क्षेत्र के कारण मुक्त इलेक्ट्रॉन्स के गर्म होने के परिणामस्वरूप बनते हैं।



एशिया पावर इंडेक्स 2025

हाल ही में, ऑस्ट्रेलिया स्थित थिंक टैंक लोवी इंस्टीट्यूट ने वार्षिक एशिया पावर इंडेक्स जारी किया।

एशिया पावर इंडेक्स 2025 के बारे में

- ▶ वार्षिक एशिया पावर इंडेक्स एशिया में देशों की सापेक्ष शक्ति का आकलन करने के लिए उनके संसाधनों और प्रभाव को मापता है।
 - ⊕ यह सैन्य क्षमता, आर्थिक क्षमता, कूटनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव सहित 8 मानदंडों के आधार पर एशिया के 27 देशों एवं क्षेत्रों की शक्ति का मूल्यांकन करता है।
 - ▶ भारत ने ‘प्रमुख शक्ति’ का दर्जा प्राप्त करते हुए तीसरा स्थान (सुधार) हासिल किया है। हालांकि यह अभी भी संयुक्त राज्य अमेरिका (प्रथम) और चीन से काफी पीछे है।
 - ⊕ यह सुधार हाल ही में हुए ऑपरेशन सिंदूर से मिले आर्थिक एवं सैन्य बल के कारण हुआ है।



स्त्री हत्या (Femicide)

इतालवी संसद ने एक ऐसे कानून को मंजूरी दी है, जो स्त्री-हत्या को विशेष अपराध के रूप में मान्यता देता है।

स्त्री-हत्या के बारे में

- स्त्री-हत्या को लैंगिक प्रेरणा से जानबूझकर की गई हत्या के रूप में परिभाषित किया गया है।
- इसे महिलाओं को लक्षित करके किए जाने वाले अपराधों की सबसे गंभीर अभिव्यक्तियों में से एक माना जाता है।
- विविध संयुक्त राष्ट्र निकायों ने 2022 में एक फ्रेमवर्क विकसित किया था। इस फ्रेमवर्क ने स्त्री-हत्या को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। ये श्रेणियां महिलाओं के उनके हमलावरों के साथ संबंधों पर आधारित हैं। निम्नलिखित द्वारा जानबूझ कर की गई महिलाओं व लड़कियों की हत्या को स्त्री-हत्या माना गया है-
 - ⊕ अंतरंग साथी; या
 - ⊕ परिवार के अन्य सदस्यों (रक्त संबंधियों और विवाह या दत्तक ग्रहण संबंधी रिश्तेदारों); या
 - ⊕ अन्य अपराधियों द्वारा हत्या।



रियल एस्टेट निवेश न्यास (REITs)

सेबी (SEBI) ने म्यूचुअल फंड्स और स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड्स (SIFs) की भागीदारी बढ़ाने के लिए REITs को इक्विटी इंस्ट्रूमेंट्स के रूप में पुनर्वर्गीकृत किया है। इसके विपरीत, अवसंरचना निवेश न्यास (InvITs) को हाइब्रिड श्रेणी में बरकरार रखा है।

- इक्विटी इंस्ट्रूमेंट्स को शेयर और विशेष रूप से पूंजी शेयर भी कहा जाता है। ये धारकों को कंपनी पर स्वामित्व अधिकार प्रदान करते हैं।
- एक हाइब्रिड प्रतिभूति दो वित्तीय साधनों की विशेषताओं को एक परिसंपत्ति में मिश्रित कर देती है। इसमें आमतौर पर ऋण और इक्विटी के पहलू शामिल होते हैं।

रियल एस्टेट निवेश न्यास (REITs) के बारे में

- परिभाषा: यह एक ऐसी कंपनी होती है, जो आय-उत्पादक रियल एस्टेट का स्वामित्व, संचालन या वित्त-पोषण करती है और ऐसा करने के लिए पूंजी जुटाने हेतु शेयर बेचती है।
- REITs उन लोगों के लिए एक वैकल्पिक निवेश व्यवस्था है, जो रियल एस्टेट में प्रत्यक्ष निवेश नहीं कर सकते।



एमएच-60आर हेलीकॉप्टर

हाल ही में, रक्षा मंत्रालय ने भारतीय नौसेना द्वारा संचालित एमएच 60आर हेलीकॉप्टर्स के रखरखाव और निरंतर समर्थन के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ प्रस्ताव व स्वीकृति-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

- इस समझौते के तहत, आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने के लिए भारत में रखरखाव और समर्थन सुविधाएं भी स्थापित की जाएंगी।

एमएच-60आर हेलीकॉप्टर के बारे में

- यह एक अत्याधुनिक नौसैनिक हेलीकॉप्टर है। इसका उपयोग अमेरिकी नौसेना और उसके सहयोगी देश करते हैं।
- इसका निर्माण लॉकहीड मार्टिन कॉर्पोरेशन करता है। यह सभी मौसमों में परिचालन करने वाला हेलीकॉप्टर है। इसे अत्याधुनिक वैमानिकी और सेंसर के साथ विविध मिशनों में सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- क्षमताएं: पनडुब्बी-रोधी युद्ध, सतह-रोधी युद्ध, समुद्री निगरानी, बचाव अभियान आदि।



नासा-इसरो सिंथेटिक अपर्चर रडार (NISAR) उपग्रह

हाल ही में, NISAR उपग्रह प्रक्षेपण, तैनाती और कमीशनिंग के पहले चरण के बाद अपने अंतिम वैज्ञानिक संचालन चरण में प्रवेश कर गया।

NISAR के बारे में

- कक्षा: यह एक भू-पर्यवेक्षण उपग्रह (EOS) है। इसे निम्न भू कक्षा (LEO) में स्थापित किया जा रहा है।
 - ⊕ इसे सूर्य-तुल्यकालिक ध्रुवीय कक्षा में स्थापित किया गया है। यह एक विशेष प्रकार की ध्रुवीय कक्षा होती है। इसमें उपग्रह, ध्रुवों के ऊपर परिक्रमा करते हुए, सूर्य की समकालिक अवस्था में रहते हैं। इसका अर्थ है कि उपग्रह पृथ्वी पर एक ही स्थानीय सौर समय पर, लगभग प्रत्येक दिन, एक ही स्थान के ऊपर से गुजरेगा।
- सहयोग: यह इसरो और नासा द्वारा संयुक्त रूप से विकसित पहला उपग्रह है।
- प्रक्षेपण यान: भू-तुल्यकालिक उपग्रह प्रक्षेपण यान F16 (GSLV-F16)।
- इसमें एक द्वि-आवृत्ति बैंड (नासा द्वारा L बैंड और इसरो द्वारा S बैंड) सिंथेटिक अपर्चर रडार (SAR) है।
 - ⊕ SAR उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले चित्र बनाने के लिए रडार एंटीना की गति का उपयोग करता है।



चक्रवात दिवस

हाल ही में, भारत ने चक्रवात दिवस से प्रभावित श्रीलंका की सहायता के लिए ऑपरेशन सागर बंधु शुरू किया।

चक्रवात दिवस के बारे में

- यह एक उष्णकटिबंधीय चक्रवात है, जिसके कारण श्रीलंका और दक्षिण भारत में भारी वर्षा हो रही है।
 - ⊕ “दिवस” नाम यमन द्वारा दिया गया है।
- विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ‘उष्णकटिबंधीय चक्रवात’ शब्द का प्रयोग तब करता है, जब पवनों का वेग ‘गेल फ़ोर्स या झंझावात बल’ (न्यूनतम 63 किमी प्रति घंटा) से अधिक हो जाता है।
- चक्रवात निम्न दाब युक्त क्षेत्र के आसपास होने वाले वायुमंडलीय विक्षोभ होते हैं। ये तीव्र और अक्सर विनाशकारी वायु परिसंचरण द्वारा पहचाने जाते हैं।
- उत्तरी गोलार्ध में पवन वामावर्त दिशा में और दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिणावर्त दिशा में अंदर की ओर प्रवाहित होती है।



BARC इंडिया ने अपने एक कर्मचारी द्वारा रिश्त के बदले TRP रेटिंग में हेरफेर करने के आरोपों की जांच के लिए एक स्वतंत्र एजेंसी नियुक्त की है।

ब्रॉडकास्ट ऑडियंस रिसर्च काउंसिल (BARC) इंडिया के बारे में

- यह एक संयुक्त उद्योग निकाय है। इसकी स्थापना प्रसारकों, विज्ञापनदाताओं और विज्ञापन एवं मीडिया एजेंसियों का प्रतिनिधित्व करने वाले हितधारक निकायों ने की है।
- BARC इंडिया एक पारदर्शी, सटीक और समावेशी टीवी दर्शक मापन प्रणाली का स्वामित्व व प्रबंधन करता है।
- BARC का मुख्य कार्य यह मापन करना है कि कितने लोगों ने, कितनी देर तक, कौन-सा चैनल या कार्यक्रम देखा। यह दर्शकों की संख्या (Viewership), और उनके द्वारा चैनल पर बिताए गए समय का डेटा एकत्रित करता है।
 - ⊕ BARC का कार्य यह देखना नहीं है कि दर्शक चैनल पर कैसे या क्यों पहुंचे।